Dr. Arun Kumar Ray
Asst. Professor
Deptt. of Psychology
U.R. College Rosera Samastipur
Paper – MJC – 2025 – 2029
Semester – 1st
Mob No 7061956103
Date – 04/11/2025

* Sub-TOPIC:-
(I) संवेग (Emotion)
(II) संवेग के सिद्धान्त (Theories of Emotion)
(III) कैनन-बॉर्ड सिद्धान्त (Cannon-Bard Theory)

* संवेग (Emotion)

संवेग पद का अंग्रेजी रूपान्तरण 'Emotion' है, जो लैटिन शब्द Emovere से बना है जिसका अर्थ है उत्तेजित करना हुए, शाब्दिक अर्थ को देखते हुए कह सकते हैं कि संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था का दूसरा नाम है मनोवैज्ञानिक इंगलिश एवं इंगलिश के अनुसार संवेग एक जटिल भाव की अवस्था होती है जिसमें कुछ खास-खास शारीरिक एवं ग्रन्थीय क्रियाएं होती हैं। वास्तव में संवेग एक ऐसी जटिल अवस्था है जहाँ मूल रूप से तीन तत्व (Elements) महत्वपूर्ण हैं- आंगिक प्रतिक्रियाएं (organic reactions) अभिव्यजन व्यवहार (Expressive movements) एवं सुखद तथा दुखद भाव (Feeling) यह तीनों ही महत्वपूर्ण है लेकिन संवेग के स्वरूप के अनुसार सुखद एवं दुखद भाव होना सबसे महत्वपूर्ण है।

व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के संवेग, जैसे-क्रोध, प्यार, डर, दु:ख आदि पाए जाते हैं लेकिन यह जन्म से मौजूद नहीं होते, पहले मनोवैज्ञानिकों का मानना था कि जन्म के समय कुछ खास संवेग बच्चे में होते

Dr. Arun Kumar Ray

P.T.O

Scanned with CamScanner

है इस सम्बन्ध में सबसे पहले वाटसन (Watson)
* 1924, ने अध्ययन किया और बताया कि भय,
क्रोध तथा प्यार व्यक्ति में जन्म से ही
मौजूद रहते हैं।

* (II) संवेग के सिद्धान्त (Theories of Emation) :—

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अमरीकन मनोवैज्ञानिकों विलियम जेम्स (William James) तथा डेनिस शरीर क्रिया वैज्ञानिक कार्ल लांजे — (Carl Lange) ने स्वतन्त्र रूप से 1880 में किया इन दोनों के विचार संवेग के सम्बन्ध में एक थे। अतः इस सिद्धान्त को जेम्स-लांजे सिद्धान्त कहा गया।

इस सिद्धान्त की व्याख्या सामान्य बोध — (Commonsense) से विपरीत है सामान्यतः हम देखते हैं कि यदि कोई शेर हमारे सामने आ जाए तो हम डर जाते हैं इसलिए हम भाग जाते हैं अर्थात पहले संवेगात्मक अनुभूति (Emational experience) होता है तथा बाद में संवेगात्मक व्यवहार — (Emational behaviour), जबकि जेम्स - लांजे के सिद्धान्त में हम यदि किसी शेर या जंगली जानवर को देखते हैं, तो भाग जाते हैं, इसलिए डर जाते हैं अर्थात पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है तथा बाद में संवेगात्मक अनुभूति होती है या हम कह सकते हैं कि यदि हम शेर या किसी जंगली जानवर को देखकर नहीं भागते, तो हममें डर की अनुभूति भी नहीं होगी अर्थात हम कह सकते हैं कि इस क्षेत्र में लाअर्ड (Laird 1984) तथा मैत्सुमोटो (Matsumato) द्वारा किए गए।

* (III) कैनन — बार्ड सिद्धान्त (Cannon-Bard Theory) :—

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मूलतः कैनन —

Cannon-Bard Theory

Cannon 1927 द्वारा किया गया बाद में बार्ड (Bard 1934) ने इसका अपने अध्ययनों एवं शोधों के आधार पर समर्थन किया, अतः इस सिद्धान्त को कैनन-बार्ड-सिद्धान्त कहते हैं।

इस सिद्धान्त के अनुसार संवेग का कारण हाइपोथैलेमस (Hypothalamus) है जो केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र (central nervous system) के आगे प्रमस्तिष्क (cerebrum) तथा थैलेमस (thalamus) के नीचे स्थित है। इसलिए इस सिद्धान्त को हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त — (Hypothalamic theory) या थैलेमिक सिद्धान्त (Thalamic-theory) या केन्द्रीय सिद्धान्त (central theory) भी कहते हैं।

कैनन-बार्ड सिद्धान्त के अनुसार सर्वप्रथम

*(I) संवेग उत्पन्न होने के लिए किसी उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रिय का उत्तेजित होना आवश्यक है

*(II) ज्ञानेन्द्रियों से तन्त्रिका आवेग हाइपोथैलेमस या थैलेमस से होता हुआ प्रमस्तिष्क वल्क में पहुँचता है

*(III) प्रमस्तिष्क वल्क हाइपोथैलेमस से अपना नियन्त्रण कम कर देता है तथा कुछ विशेष परिस्थितियों में ऐसे तन्त्रिका आवेगों को मस्तिष्क में भेजता है जिनकी उत्पत्ति विकल्प में होती है।

*(IV) परिणामस्वरूप हाइपोथैलेमस उत्तेजित रूप से क्रियाशील हो जाता है

*(V) हाइपोथैलेमस के क्रियाशील होने पर तन्त्रिका आवेग दो दिशा में अर्थात ऊपर की ओर प्रमस्तिष्क वल्क में तथा नीचे की दिशा में अन्तरांग (viscera) तथा बाह्य अंगों की मांसपेशियों तक एक साथ जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप संवेगात्मक अनुभूति तथा व्यवहार एक साथ होता है।

Scanned with CamScanner